शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मैला आँचल में ग्राम्य समस्या का चित्रण

डॉ. गुरविन्दर सिंह गिल
सहा. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भाषा विभाग)
एम.बी. खालसा महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

अंचल एक विशिष्ट भूखंड का बोधक है । यह राष्ट्र के एक ऐसी स्वतंत्र इकाई है जिसका सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि दृष्टि से अपना विशेष महत्व होता है। हिंदी क्षेत्र इतना विस्तृत है कि इसमें भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भाषा, पोशाक आदि की भिन्नता के कारण ऐसे अनेक अंचल हैं ओ जिनसे आंचलिक उपन्यासों के लिए प्रेरणा मिलती है। जिन उपन्यासों में किसी अंचल, प्रदेश अथवा जनपद विशेष के जनजीवन का यथार्थ चित्रण होता है वे आंचलिक उपन्यास कहे जाते हैं । प्रस्तुत शोध पत्र में फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' उपन्यास में वर्णित ग्राम्य समस्या का अध्ययन किया गया है

भूमिका

हिंदी में आंचलिक शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग होता है 'मैला आँचल' की भूमिका में । नागार्जुन के उपन्यासों में प्रादेशिक रूप का चित्रण पहले ही हो चुका था। इससे भी पूर्व शिवपूजन सहाय की देहाती दुनिया में आंचलिक रंग और प्रादेशिक रूप का स्पष्ट अंकन हुआ है । इसके बाद भी आंचलिक शब्द का प्रचलन 1954 में प्रारम्भ हुआ, जिसका श्रेय फणीश्वर नाथ रेणु को जाता है। आंचलिक उपन्यासों में कथा की योजना एक विशेष अंचल से ही सम्बद्ध होती है । इसमें आंचलिक संस्कृति का चित्रण किया जाता है । यही वह मूल संवेदनात्मक तत्व है जिसके आधार पर कोइ उपन्यास आंचलिक कहलाता है । आंचलिक परिवेश का चित्रण उपन्यास को जीवंत बनाता है । पात्र योजना और पात्रों की भाषा सार्वदेशिक नहीं होती । भाषा में स्थानीय प्रयोग आने से उपन्यास का महत्व बढ़ जाता है । फणीश्वर नाथ रेणु का नाम आंचलिक उपन्यासकारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

मैला आँचल में ग्राम्य समस्या

मैला आँचल का कथा क्षेत्र बिहार के पूर्णिया जिले का एक ग्राम मेरीगंज है। मेरीगंज की लोक संस्कृति का चित्रण 'मैला आँचल ' में इतनी व्यापकता के साथ हुआ है कि इसे वहाँ की संस्कृति के इतिहास का पृष्ठ भी कहा जा सकता है।

भारतीय ग्राम्य समाज विशेषकर पिछड़े ग्राम्य समाज का सजीव एवं यथार्थ चित्रण 'मैला आँचल' में देखने को मिलता है । यहाँ के रहने वाले लोगों की विभिन्न समस्याएँ , अलग-अलग परिस्थितियाँ, प्रचलित गुण-दोष आदि आज भी भारत के पिछड़े ग्रामों में देखने को मिल जाते हैं। गरीबी , पिछड़ापन, जाति भेद , जमींदार एवं पुलिस के अत्याचार , भूमि विषयक समस्याएँ , परस्पर ईर्ष्या, चुगलखोरी और अनैतिक सम्बन्ध इसके उदाहरण है। वास्तव में 'मैला आँचल '

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उपन्यास की कथा किसी व्यक्ति विशेष की नहीं बल्कि पूरे गाँव की कथा है । हालाँकि यह उपन्यास समस्यामूलक नहीं है फिर भी यह लेखक का कौशल ही है कि ये समस्याएँ पूरे उत्तर भारत के पिछड़े गाँवों की समस्याओं का प्रतिनिधित्व करती है । इन समस्याओं को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, वैयक्तिक एवं भौगोलिक समस्याओं के रूप में रखा जा सकता है।

सामाजिक समस्याएँ

मेरीगंज का समाज यद्यपि हर दृष्टि से पिछड़ा है, किन्तु इसमें भी विशेषताएं हैं। इस समाज में जमींदार-तहसीलदार-विश्वनाथ प्रसाद , हरगौरी महंत, रामदास लक्ष्मी , लरसिंह जैसे-धार्मिक , बलदेव, कालीचरण और वासुदेव जैसे-नेता , बावनदास जैसे देषभक्त और डाॅ. प्रषांत जैसे पढ़े-लिखे तथा फूलिया , रामपिपरिया और संथाल जैसे निम्नवर्गीय जन है।

उपन्यास में जाति प्रेम , वर्ग भेद, ऊँच-नीच, भोग-विलास जैसे सामाजिक समस्याओं का चित्रण तो है ही साथ ही खान-पान (गाँजा, ताड़ी, चने की घूँघली), वेषभूषा (चादर, पजामा, पतलून, लुंगी), रीति-रिवाज (भंडारा, जाट-जट्टनी, नृत्य) आदि को भी स्पष्ट किया गया है। साधारण रूप से 'गाँव के लोग बड़े सीधे दिखते हैं ' सीधे का अर्थ यदि अपढ़, अज्ञानी और अंध विश्वासी से हो तो वे वास्तव में सीधे हैं। जहाँ तक सांसारिक बुध्दि का सवाल है, वे लोगों को दिन में पाँच बार ठग लेंगे। सुमरित दास, विश्वनाथ प्रसाद, दुलारचन्द ही नहीं रामप्यारी, कमला और लक्ष्मी तक इसके उदाहरण है। यह सामाजिक विडम्बना ही है , गाँव का ब्राह्मण, चमारिन, भंगन को एक ओर तो कुएँ से पानी तक नहीं लेने देता , परन्तु उसके साथ रात गुजारने में उसे कोई संकोच नहीं है। गाँव में संथाल विद्रोह , ब्राह्मण-यादव गुट का बैर , सुमरितदास की लगाई-बुझाई , मठों में व्याप्त भोग-विलास तथा ज्योतिष के इशारे पर गनेस की नानी को डायन मान लेने के प्रसंग सामाजिक समस्याओं का प्रकटीकरण है।

राजनीतिक समस्याएँ

मानव समाज को राजनीति से पृथक नहीं किया जा सकता। प्राचीनकाल से ही राजनीति जीवन का अभिन्न अंग है। साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा । मैला आँचल का मेरीगंज फिर इससे कैसे बच सकता था ? उपन्यास का प्रारंभिक समय स्वतंत्रता आंदोलन का काल है। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जनता में स्वतंत्रता की चाहत बढ़ने लगी थी। कांग्रेस के झंडे तले यह आंदोलन पूरे देश में फैल गया , तो मेरीगंज इससे अछूता कैसे रहता ? बालदेव और बावनदास, कांग्रेस और गाँधी के परम भक्त है। वे अहिंसा और अन शन जैसे गाँधीवादी विचारों के समर्थक है।

'भारतमाता' की दुर्दशा को लेकर वे व्यथीत है। स्वतंत्रता प्राप्त होते ही दे श का राजनीतिक परिदृश्य बदल जाता है, अहिंसावाद दिखावटी रूप ले लेता है। बावनदास जैसे सच्चे गाँधीवादी को मरवा दिया जाता है। इससे बालदेव का अहिंसा भाव भी डगमगाने लगता है।

राजनीतिक हथकण्डे , भाई-भतीजावाद, स्वार्थ, जाति-बिरादरी राजनीति के प्रमुख घटक बन जाते हैं। सब के सब मैले (एम.एल.ए) बनना चाहते हैं। गरीब एवं मजदूरों के काम, व्यक्तिगत लोभ और स्वार्थ की आकांक्षा के लिए ही कराए जाने लगे। इससे लोकहित गहरे रूप से प्रभावित हुआ।

मेरीगंज में भी कांग्रेस , जनसंघ, समाजवादी और साम्यवादी पार्टियों के व्यक्ति अपनी-अपनी विचारधारा को श्रेष्ठ साबित करने के लिए प्रयासरत है। काली टोपी पहनने वाले जनसंघ के

संयोजक अपने में रमे है तो डॉक्टर प्रशांत कम्युनिस्ट पार्टी तथा कालीचरण , वासुदेव समाजवादी पार्टी का प्रतिनिधित्व करते हैं। बावनदास कांग्रेसी है जो भारतमाता की दुर्दशा की दुहाई देना नहीं भूलते।

राजनीतिक मतवाद, वर्गसंघर्ष, चुनाव, चन्दा-उगाही आदि पर करारे व्यंग्य भी उपन्यास में देखने को मिलते हैं। स्वतंत्रता का जुलूस और गाँधी का असामयिक निधन उपन्यास को और मेरीगंज को वास्तविकता के करीब लाता है।

मेरीगंज ग्राम में आर्थिक दृष्टि से दो वर्ग है- धनी और निर्धन। धनी वर्ग की अपने समस्याएँ हैं। एक ओर वह अधिकाधिक भूमि और अन्य लाभप्रद साधन जुटाने में लगा है तो दूसरी ओर रिष्वत, डाली या भेंट-पूजा द्वारा अपने बिगड़े काम बना लेता है। जमींदार विश्वनाथ प्रसाद इसी वर्ग के प्रतिनिधि हैं। वहीं दूसरी ओर है जनसाधारण।

जमीन के मालिकों ने धरती पर इनका (जनसाधारण) किसी भी किस्म का हक नहीं जमने दिया है। जिस जमीन पर उनके झोपड़े हैं, वह भी उनके नहीं है। इसी से कुछ एक गिने चुने को छोड़कर सारे गाँव में निर्धनता का राज्य है। कपड़ा हो या धान सभी का इन पर अभाव है। इसी से कपड़ा, तेल, चीनी आदि सभी के लिए गाँव में इतना हाहाकार मचता है कि बालदेव तक घबरा जाता है। पुरुष तो क्या ? बालिका, युवतियाँ और बुढ़ियाँ तक कमर में एक कपड़ा लपेटकर काम चलाती हैं ? कालीचरण जैसे समाजवादी अवश्य 'जो जोते सो काटे ' जैसे नारे लगाते हैं , परन्तु संथाल विद्रोह पर वे भी जमींदारों का साथ देते हैं। डॉक्टर प्रशांत एक मानसिक सहानुभूति और काव्यात्मक भावुकता तक सीमित रह जाता है। उसकी आँखें इंसान के उन टिकोलों पर लड़ती हैं जिन्हें आमों की गुठलियों , सूखे गूदे की रोटी पर जिंदा रहना है। डॉक्टर यहाँ की गरीबी और बेबसी के देखकर आश्चर्यचकित होता है। ओढ़ने को वस्त्र नहीं य सोने को चटाई नहीं , पुआल नहीं। .....देह में कड़वा तेल लगाना भी स्वर्गीय भोग-विलास में नगण्य है। .....बेजमीन आदमी नहींय वह तो जानवर है । .....गरीबी और जहालत इस रोग के दो कीटाणु हैं।

इसी से ग्राम का युवक वर्ग शहरों की ओर भागता है, क्योंकि 'कटिहार में एक जूट मिल और खुला है। दो रुपया रोज मजदूरी मिलती है। गाँव में अब क्या रखा है ? वहाँ तो अधिकतर बेगार ही ढोनी पड़ती है। इस प्रकार अर्थ वैषम्य , वर्ग भेद, भूमिहीन कृषक, निर्धनता, ऋण, महँगाई, बेगार आदि न जाने कितनी समस्याएँ इस अंचल के मैले रूप को यहाँ प्रदर्षित करती है।

व्यक्तिगत समस्याएँ

उपन्यास के कई प्रमुख पात्र अपनी व्यक्तिगत समस्याओं से पीड़ित मिलते हैं। डॉ.प्रशांत हीन भाव से ग्रसित है , तो कमला और लक्ष्मी यौन ग्रंथि की शिकार है। महंत सेवादास महोदय 'आँगन में बहती नदी (लक्ष्मी) होने पर भी प्यासे हैं तो बालदेव दीर्घकाल तक अपने आदर्श व्रत से भयभीत बना रहता है। कालीचरन तो स्त्री से पाँच हाथ दूर से ही बात करता है और दूसरों का भविष्य बताने वाले ज्योतिषी जी आजन्म कामुकता से ग्रसित है। सबसे अधिक कमला , प्रशांत और लक्ष्मी की व्यक्तिगत समस्याएँ हैं। कुँवारी कमला को पुरूष की भूख है। उसके दौरों की बीमारी का इलाज है- डॉ.प्रशांत। डॉ.. प्रशांत हीन ग्रंथि का शिकार है, क्योंकि उसको "एक माँ जन्म देते ही कोसी मैया की गोद में सौंप देती है और दूसरी उसे जन-समुद्र लहरों में समर्पित कर देती है। " वह प्यार का भूखा है। इधर लक्ष्मी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मठाधीशों की कृपा से वासना से पीड़ित है और सच्चे प्यार की तलाश में है। लेखक ने इन सभी व्यक्तिगत समस्याओं का वर्णन बड़े सरल-सहज, यथार्थ ढंग से किया है।

भौगोलिक समस्याएँ

उपन्यास का कथास्थल मेरीगंज नामक गाँव है , जो पूर्णिया जिले का एक भाग है। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है, इसके एक ओर नेपाल है, तो दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल। विभिन्न सीमा रेखाओं के कारण हमें दक्षिण में संथाल परगना और पष्चिम में मिथिला की सीमा दिखाई देती है। निःसंदेह यह स्थान पिछड़ा हुआ है और इसका एक बड़ा कारण है ... यहाँ की भौगोलिक स्थिति। अनावृष्टि , दलदल और मच्छरों की बहुतायत से मलेरिया जैसी बीमारियों की यहाँ प्रचुरता है। लेखक ने प्रकृति के विभिन्न दुष्प्रभावों का चित्रण भी किया है। किसानों का वर्षा हेतु इन्द्र को प्रसन्न करना , स्त्रियों का तत्सम्बन्धी उत्सव में नृत्य करना एवं डॉ. प्रशांत का मलेरिया विषयक अनुसंधान करना आदि प्रसंगों में उपन्यासकार ने भौगोलिक समस्याओं को भी उठाया है। कथानक में असंबद्धता, नायकविहीनता, बहिरंग की अपेक्षा अन्तरंग स्थिति पर जोर, ग्रामीण संस्कृति और यथार्थ जीवन का चित्रांकन आदि इसकी विशेषताएं हैं । लेखक किसी पूर्वाग्रह का शिकार नहीं है, वरन तटस्थ है । मध्यवर्गीय किसान और ग्रामीण जमींदार के संघर्षमय जीवन का जितना सफल चित्रण यहाँ है, अन्यत्र नहीं।

निष्कर्ष

इस तरह रेणुजी ने 'मैला आँचल' में ग्राम्य जीवन और उसकी विविध समस्याओं का अंकन विस्तार, गहनता, सूक्ष्मता और यथार्थ रूप में किया है । प्रस्तुत उपन्यास में आत्मीयता का जो लक्षण उभरकर सामने आता है उसका श्रेय सिर्फ रेणुजी को जाता है । सच तो यह है कि ग्राम्य जीवन का इतना यथार्थ एवं रोचक चित्रण प्रेमचंद के बाद रेणु ही उपस्थित कर सके और यही उनकी उपलब्धि भी है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 हिंदी साहित्य युग और धारा, कृष्ण नारायण प्रसाद 'मगध', भारती भवन, पटना

2 मैला आँचल, फणीश्वर नाथ रेणु